

डॉ. जॉन ओसवाल्ट, यशायाह, सत्र 2, ईसा 2 © 2024 जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जॉन ओसवाल्ट और यशायाह की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र संख्या दो, यशायाह अध्याय दो और तीन है। खैर, आप यहां हैं और मैं यहां हूँ और सात बजे हैं इसलिए मुझे लगता है कि इसका मतलब है कि यह शुरू करने का समय है।

आइये मिलकर प्रार्थना करें। हे भगवान, हम आपकी उपस्थिति को पहचानने के लिए रुकते हैं। हम जानते हैं कि आने के लिए हमें आपसे विनती नहीं करनी पड़ेगी।

हम जानते हैं कि आप अपने शब्दों के माध्यम से स्वयं को हमारे सामने प्रकट करने के लिए हमारी कल्पना से कहीं अधिक उत्सुक हैं। और इसलिए हम प्रार्थना करते हैं कि आप हमें सुनने के लिए कान, प्राप्त करने के लिए हृदय, करने की इच्छा दें। हे प्रभु, हमें केवल उन कानों में खुजली होने से बचाएं जो कुछ नई बातें सुनना चाहते हैं, लेकिन हमें आपके साथ चलकर आपको जानने का दृढ़ संकल्प दें, हे प्रभु।

हे प्रभु, हमारी मदद करें, जब हम आपके वचन में यह समय एक साथ बिता रहे हैं ताकि हम में से प्रत्येक अपना हाथ आपके हाथ में और अधिक मजबूती से रखने में सक्षम हो सके और हमारे कदम आपके साथ अधिक निकटता से मेल खा सकें। आपके नाम पर, हम प्रार्थना करते हैं, आमीन। खैर, आज शाम आपको देखकर कितनी खुशी हुई।

मैंने करेन से कहा कि, ओह, इस बारिश से भीड़ आधी हो जाएगी। खैर, ऐसा नहीं हुआ। जितना मैंने आपको विश्वासयोग्य होने का श्रेय दिया, आप उससे कहीं अधिक वफादार हैं।

इसलिए यहां आने के लिए धन्यवाद। आने के लिए धन्यवाद। अब, दरवाजे के ठीक बाहर मेज पर अगले सप्ताह के लिए अध्ययन मार्गदर्शिकाएँ थीं।

वहाँ 100 से अधिक होने चाहिए थे। तो, यदि आपको एक भी नहीं मिला, तो कृपया, क्या आप वहाँ देख सकते हैं? क्या मेज़ पर और भी कुछ है? मेज पर और भी बहुत कुछ है। तो, वे अगले सप्ताह आपके लिए मौजूद हैं।

और अगर आप आगे काम करेंगे तो मुझे बिल्कुल भी परेशानी नहीं होगी। यह बुद्धिमानों के लिए एक शब्द है। हम यशायाह की किताब देख रहे हैं।

फिर, पिछले सप्ताह के अतिरिक्त हैंडआउट्स थे, लेकिन मैंने देखा कि वे चले गए हैं। तो, यदि आप, तो मुझे यह पूछने दीजिए। यदि आपको पिछले सप्ताह से हैंडआउट्स नहीं मिले और आज रात भी नहीं मिले, तो क्या आप अपना हाथ खड़े कर देंगे? एक दो तीन चार।

नक्शे वहाँ हैं, लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि, ओह, वहाँ कुछ हैं। ठीक है, अच्छा है, मुझे लगता है कि इसे छुपा दिया गया है। तो कृपया, यदि आपको कोई नहीं मिला है, तो अपना हाथ पकड़ें और हमारा मित्र उन्हें आप तक पहुंचा देगा।

हम यहाँ पर हैं? ठीक है। ठीक है। अब अगला सवाल यह है कि पिछले हफ्ते यहां कौन नहीं था? ठीक है, काफी कुछ।

ठीक है। तो आइए मैं परिचय में कुछ क्षण बिताऊं। पुस्तक के पहले पाँच अध्यायों को प्रस्तावना समझा जाता है।

परिचय में, और अब यह आवश्यक रूप से सभी विद्वानों की दुनिया से अधिक मेरी समझ होगी, लेकिन परिचय के बारे में मेरी समझ यह है कि यशायाह एक समस्या प्रस्तुत कर रहा है। वह क्या होगा बनाम क्या है की समस्या सामने रख रहा है। और हम आज शाम उन दो अध्यायों में विशेष रूप से उस पर ध्यान केंद्रित करने जा रहे हैं जिन्हें हम देख रहे हैं।

और सवाल यह है कि यह कैसे संभव है कि जो है वह कभी भी वही बन सकता है जो होगा या जो होना चाहिए? और यही वह मुद्दा है जो वहाँ हमारे लिए रखा गया है। हमने इसे पिछले सप्ताह अध्याय एक में सूक्ष्म जगत में देखा, जहाँ शहर क्या है, इन घोषणाओं के बीच हमारे पास यह दोलन है। धर्मात्मा नगर वेश्या बन गया है।

वह एक समय न्याय से परिपूर्ण थी। उसमें धर्म का वास था, अब हत्यारे हैं। यही तो है।

तौभी वह कह सकता है, कि मैं तेरे अगुवों को प्राचीनकाल के समान, और तेरे हाकिमों को पहिले के समान लौटा दूंगा। इसके बाद तू धर्म का नगर, विश्वासयोग्य नगर कहलाएगा। और हम कहते हैं, हुह, क्या? तो ये पांच अध्याय हमारे लिए उस मुद्दे को स्थापित कर रहे हैं कि हमारे पास स्थिति वैसी ही है, और फिर भी हमारे पास कुछ भविष्यवाणियां हैं कि क्या होगा।

तो उस आधार पर, आइए अब अध्याय दो और तीन को देखें। विशेष रूप से पुराने नियम में कुछ मामले हैं, जहाँ यह बिल्कुल स्पष्ट है कि अध्याय विभाजन गलत स्थान पर रखा गया है। उनमें से एक आज रात यहाँ है।

अध्याय विभाजन अध्याय तीन, श्लोक 26 और अध्याय चार, श्लोक एक के बीच नहीं होना चाहिए। यह अध्याय चार, एक और चार, दो के बीच होना चाहिए। अब वास्तव में यह कैसे हुआ, हम निश्चित रूप से नहीं जानते।

ऐसा कहा जाता है कि अध्याय विभाग एक साधु द्वारा लगाए गए थे जब वह अपने गधे पर सवार होकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा रहा था। जाहिर है, गधा यहाँ एक गड्ढे से टकरा गया। यशायाह में इसका दूसरा उदाहरण जो हम देखेंगे वह यह है कि यशायाह अध्याय 53 वास्तव में अध्याय 52, 13 से शुरू होता है, एक बहुत ही उत्कृष्ट उदाहरण जहाँ कविता के तीन छंद पिछले अध्याय में रखे गए थे और नहीं होने चाहिए थे।

तो, हम आज रात 2, 1 से 4, 1 पर विचार कर रहे हैं। अब क्या कोई आगे काम करेगा? 2, 1 से 5 और 2, 6, 4 से 1 के बीच क्या संबंध है? क्या होगा और क्या है. हाँ, एक बहुत, बहुत मजबूत विरोधाभास। अब अध्याय 2, श्लोक 1 में, हमारे पास एक बार फिर यह कथन है, यह वही है जो आमोस के पुत्र यशायाह ने यहूदा और यरूशलेम के विषय में देखा था।

यह दूसरा स्थान है जहाँ लेखक की पहचान होती है। पहला अध्याय 1, श्लोक 1 में था। आपको ऐसा क्यों लगता है कि उसे यहां दूसरी बार पहचाना जाएगा और यह किताब में कहीं और नहीं होगा? इन दो अध्यायों में यह विशेष रूप से कहा गया है। और गलत होने की चिंता मत करो क्योंकि कोई भी सहमत नहीं है।

आपको क्या लगता है कि यशायाह ने अपना नाम यहाँ दूसरी बार क्यों रखा है? ठीक है ठीक है। वह अपनी पहचान बना रहा है. वह उस दृष्टिकोण को मान्य कर रहा है जो वह यहां देखता है।

मुझे लगता है कि यह एक अच्छा विकल्प है. हाँ। मुझे लगता है कि यह उसके नाम के कारण है।

क्योंकि उसका नाम है परमेश्वर बचाएगा। यहोवा बचाएगा। और वह जाते-जाते इसे अपना नाम देकर इसे पृष्ठ कर रहा है।

मुझे लगता है कि यह भी एक अच्छी संभावना है। हाँ। ठीक है, पहले भाग में वह ऐतिहासिक सेटिंग स्थापित कर रहा है कि उसने किन राजाओं के अधीन सेवा की।

कोई अन्य विचार? अब यह बहुत दिलचस्प है. मैंने आपसे ऐसा करने के लिए नहीं कहा, लेकिन वास्तव में, श्लोक 2 से 4 तक मीका की पुस्तक में आपके पास जो कुछ है, उसका शब्द-दर-शब्द दोहराव है, अध्याय 4, श्लोक 1 से 4। वे शब्द-दर-शब्द हैं वही। और कुछ लोग कहेंगे कि यशायाह स्थापित कर रहा है, मैं ही हूँ जिसने इसकी उत्पत्ति की है।

संभावित हो। संभावित हो। मुझे लगता है कि यह भी संभव है कि यह देश में एक आम बयान था और प्रेरणा के तहत मीका और यशायाह दोनों ने इसे उठाया और इसका इस्तेमाल किया।

ठीक है, फिर आगे बढ़ते हैं। पृष्ठभूमि में, मैं बताता हूँ कि प्राचीन दुनिया में, पहाड़ों को देवताओं का निवास स्थान माना जाता था। तो अध्याय 2, श्लोक 2 में जो कहा जा रहा है, अंतिम दिन, भगवान के मंदिर का पर्वत पहाड़ों में सबसे ऊँचे के रूप में स्थापित किया जाएगा।

क्या बात है? मैं यहां कई बातें सुन रहा हूँ. हाँ। ईश्वर का नियम सर्वोच्च है.

क्यों कहते हैं यरूशलेम पहाड़ों में सबसे ऊँचा है? वह भगवान है. वह सच्चा भगवान है. अन्य सभी देवता पहाड़ियों पर रहते हैं।

परन्तु यहोवा सब से ऊँचे पर्वत पर रहता है। अब कुछ लोग कहते हैं, हे भगवान, अंतिम दिनों में एक बड़ा भूकंप आने वाला है और यरूशलेम माउंट एवरेस्ट से भी ऊपर चला जाएगा। यह कविता की शाब्दिक व्याख्या है।

जो बात कही जा रही है वह यह है कि वह भगवान है और कोई नहीं है। और जिस स्थान पर उनकी पूजा की जाती है वह वास्तव में किसी भी पर्वत से सबसे ऊंचा है जिसकी आप कभी कल्पना भी कर सकते हैं। अब, यहाँ श्लोक 3 में यहोवा को याकूब के परमेश्वर के रूप में संदर्भित किया गया है।

एक बार फिर, इसका कोई आवश्यक रूप से सही उत्तर नहीं है, लेकिन ध्यान दें कि यह इब्राहीम का ईश्वर नहीं है। यह याकूब का परमेश्वर है। आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि यशायाह ने ऐसा किया है? ठीक है, वह सिर्फ यहूदा का परमेश्वर नहीं है।

याकूब के 12 बेटे थे और इसमें देश के सभी लोग शामिल थे। यहूदा का गोत्र एक ही गोत्र है। 11 और हैं।

तो, हाँ, मुझे लगता है कि यह एक अच्छी संभावना है। हाँ। ठीक है, ठीक है।

याकूब क्या था और याकूब क्या बन गया। हां, मुझे लगता है कि यह भी एक अच्छी संभावना है। कुछ अन्य भी हैं, लेकिन मुझे लगता है कि वे ही प्रमुख हैं।

अब देखिये लोग क्या कहते हैं. आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर याकूब के परमेश्वर के मन्दिर तक चलें। वह क्या करेगा? हमें किस उद्देश्य से पढ़ायें? वह किस उद्देश्य से हमें अपने तरीके सिखाने जा रहा है? कि हम चल सकें.

आपमें से जो लोग पिछले 18 महीनों से मेरे साथ हैं, मुझे आशा है कि उन्हें यहां एक मुद्दा मिलना शुरू हो गया है। मोक्ष कोई पद नहीं है. यह एक सैर है.

पुराने नियम के माध्यम से ही सही। भगवान हमें अपने साथ एक रिश्ते में बुलाते हैं जहां हम एक बिंदु से दूसरे बिंदु और फिर उसके अंतिम लक्ष्य, जो कि ईश्वरत्व है, की ओर बढ़ रहे हैं। उससे समानता.

इफिसियों अध्याय 1. उसने हमें पृथ्वी की उत्पत्ति से पहले ही उसमें चुन लिया कि हम उसके समान पवित्र बनें। तो दुनिया वाले कहते हैं हम जानते हैं कि हमें क्या चाहिए। अब, फिर से, मुझे देखने दीजिए कि क्या मुझे छोड़ देना चाहिए और ट्रक चलाना शुरू कर देना चाहिए।

टोरा का क्या मतलब है? कोई भी? अनुदेश. अनुदेश. हमारे लिए कानून देखना बहुत आसान है.

कानून कुछ नकारात्मक है, कुछ ऐसा है जो हमें बंद कर देता है, कुछ ऐसा है जो हमारी स्वतंत्रता को सीमित कर देता है। लेकिन नहीं, टोरा ईश्वर की निर्देश पुस्तिका है। और दुनिया के लोग कह रहे हैं, हाँ, हम समझते हैं।

आओ, हम परमेश्वर के निर्देशों को सीखें ताकि हम उसकी तरह चल सकें और उसकी तरह जी सकें। उत्पत्ति 17. हमने इसे पहले भी देखा है।

आइए इसे फिर से देखें। इब्राहीम को परमेश्वर का निर्देश. जब अब्राहम 99 वर्ष का हुआ, तब यहोवा ने उसे दर्शन देकर कहा, मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ।

मेरे सामने ईमानदारी से चलो और कहो, किंग जेम्स ने इसे सही, उत्तम पाया है। अर्थात्, वह सब बनो जो तुम्हें बनाया गया है। पूर्ण होने का अर्थ अचूक होना नहीं है।

पूर्ण होने का अर्थ दोषरहित होना नहीं है। ब्लेमलेस यहां कोई बुरा अनुवाद नहीं है, लेकिन जब किसी चीज़ को पूर्ण किया जाता है, पूरा किया जाता है, उसे उस स्थान पर लाया जाता है जहां उसे बनाया गया था, तो वह पूरी शक्ति से चूक जाता है। आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के परमेश्वर के मन्दिर में जाएं।

वह हमें अपने मार्ग सिखाएगा ताकि हम उसके मार्ग पर चल सकें। तोराह सिथ्योन से निकलेगा, यहोवा का वचन यरूशलेम से निकलेगा। श्लोक 4, वह राष्ट्रों के बीच न्याय करेगा।

हमने पहले भी इस शब्द निर्णय के बारे में बात की है और हमें खुद को याद दिलाने के लिए कि यहां क्या हो रहा है, इसे फिर से करने की जरूरत है। हम निर्णय के बारे में लगभग पूरी तरह से कानूनी दृष्टि से सोचते हैं, लेकिन हिब्रू अवधारणा इससे कहीं अधिक है। हिब्रू शब्द एसएच है, यह एक व्यंजन है, पी, यह दूसरा व्यंजन है, और जोरदार टी, यह तीसरा व्यंजन है।

तो, सैमसन जैसा जज, भाग्य दिखाने वाला होता है। लेकिन सैमसन के बारे में सोचो. क्या आप उसे पाउडर विग और काले वस्त्र में कल्पना कर सकते हैं? नहीं, कोई मौका नहीं।

ये लोग, ये जज कौन हैं? वे ही हैं जो परमेश्वर की व्यवस्था को बहाल करते हैं। उन तीन व्यंजनों का वास्तविक अर्थ क्रम है। तो, शब्द, संज्ञा जो इन तीन व्यंजनों से बनी है, मिशपत, का अनुवाद अक्सर निर्णय के रूप में किया जाता है, लेकिन आप जानते हैं क्या? इसका अनुवाद ब्लूप्रिंट भी किया जा सकता है।

और इसका कस्टम में अनुवाद भी किया जा सकता है. यह वह क्रम है जिसके अनुसार भवन का निर्माण किया जाएगा। यह वह व्यवस्था है जिसे लोग रीति-रिवाजों के माध्यम से अपने जीवन में लागू करते हैं।

और ईश्वर का निर्णय उसके दिव्य आदेश को दुनिया में लाना है। और इसीलिए भजनहार कहता है, ओह, धन्यवाद करो क्योंकि न्यायी आ रहा है। मैं आम तौर पर ऐसा नहीं सोचता.

लेकिन वे कह रहे हैं, हाँ, वह आ रहा है और वह इस अव्यवस्थित दुनिया को वापस उसी क्रम में लाने जा रहा है जिसकी शुरुआत में योजना बनाई गई थी। ओह, जज आ रहे हैं. वो अच्छी खबर है।

वह राष्ट्रों के बीच न्याय करेगा, बहुत से देशों के झगड़ों का निपटारा करेगा, उनकी तलवारों को पीटकर हल के फाल और उनके भालों को हंसिया बना देगा। राष्ट्र राष्ट्र के विरुद्ध तलवार नहीं

उठाएगा, न ही वे अब युद्ध के लिए प्रशिक्षण लेंगे। भगवान अपने दिव्य आदेश, अपने मिशपत को दुनिया में वापस लाने जा रहे हैं।

और जैसा कि मैंने कहा, मुझे लगता है कि हाल ही में, जिन कारणों से मुझे विश्वास है कि यीशु सहस्राब्दी राज्य से पहले लौटने वाला है, उनमें से एक यह है कि मैं सिर्फ यीशु को एक हजार साल तक अपनी दुनिया पर शासन करते हुए देखना चाहता हूँ, जिस तरह से उसे होना चाहिए था। तो, यशायाह चाहता है कि उसके लोग इससे क्या निष्कर्ष निकालें? श्लोक 5. हाँ, और क्या करें? हाँ, यदि अन्यजाति एक दिन हमारे पास आकर कहेंगे, हमें परमेश्वर की टोरा सिखाओ ताकि हम उसके मार्गों पर चल सकें, तो हमें क्या करना चाहिए? हमें उनके बताए रास्ते पर चलना चाहिए। हमें प्रभु के प्रकाश में चलना चाहिए।

अब, यह हल्की चीज़, प्रकाश और अंधकार, विशेष रूप से अगले पाँच या छह अध्यायों में चलने वाली है, जो वास्तव में एक महत्वपूर्ण प्रकार का जोर है। और फिर हम इसे पुस्तक के अंतिम अध्यायों में फिर से देखने जा रहे हैं। ठीक है, तो यह वहाँ है।

अब पद 6 को देखें। हे यहोवा, तू ने अपने लोगों को, अर्थात् किस के वंश को त्याग दिया है? जेकब. बहुत खूब। यह ऐसा है जैसे कि जब वे शहर में रेल की पटरियों पर काम कर रहे हों तो उन्हें पार कर रहे हों।

हम वहाँ मेन स्ट्रीट और WHAM से आसानी से आ रहे हैं! यहाँ क्या हुआ? अब, फिर से, यदि किसी ने अपना होमवर्क किया है, तो 2.6 से 4.1 तक चलने वाला सामान्य विषय क्या है? अभिमान का पाप. आपने बिल्कुल सही समझा, मेल। अब, वहाँ यह एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाता है।

मानव उत्कर्ष. तो, ये वे लोग हैं जिनके पास अन्यजाति परमेश्वर के तरीके सीखने के लिए आते हैं, वे खुद को ऊपर उठाने में पूरी तरह से लीन हैं। उत्पत्ति अध्याय 11 पर वापस जाएँ।

यह एक अकेली, भयावह दुनिया है. आप और मैं इतने महत्वहीन, इतने महत्वहीन लगते हैं, और इसलिए खुद को ऊपर उठाने पर पूरी तरह से केंद्रित हो जाना बहुत, बहुत आसान है। आत्म-सम्मान आंदोलन के बारे में यह आश्चर्यजनक बात है।

यह वास्तव में आवश्यक नहीं है कि अन्य लोग हमारे आत्म-सम्मान का निर्माण करें। हम स्वयं इसमें बहुत अच्छे हैं। और मुझे जॉन रोज़मैन बहुत पसंद है।

मुझे जॉन रोज़मैन जो भी कहते हैं वह मुझे पसंद है, लेकिन वैसे भी, मुझे विशेष रूप से अच्छा लगता है जब वह कहते हैं, आप जानते हैं, हमें इस आत्म-सम्मान वाली चीज़ के बारे में दो बार सोचना चाहिए जब हम मानते हैं कि जिस एकल समूह में सबसे अधिक आत्म-सम्मान है वह अपराधी है. मैं काम करने में बहुत होशियार हूँ. मैं आप लोगों जैसा नहीं हूँ.

तो फिर, तुरंत ही इन अगले छंदों में, छंद 6, 7, और 8 में एक शब्द दोहराया गया है। क्या आपको मिला भरा हुआ। वे किस चीज़ से भरे हुए हैं? सब कुछ खराब.

अंधविश्वास. वे किस चीज़ से भरे हुए हैं? चांदी और सोना। वे किस चीज़ से भरे हुए हैं? घोड़े और रथ.

वह क्या है? सैन्य हार्डवेयर. इतिहास में इस समय चीज़ें बदल रही थीं, लेकिन इस समय तक, घोड़ा और हल्का रथ ही अंतिम हथियार थे। वे आज एक मुख्य युद्धक टैंक के बराबर होंगे।

अब, यह इस बिंदु के बारे में सही बदल रहा था। वे खोज रहे थे कि घोड़ों की सवारी कैसे की जाती है, और घुड़सवार सेना काम में आ रही थी, लेकिन यह अभी भी सैन्य हार्डवेयर के लिए एक मार्कर था। किस चीज़ से भरा हुआ? मूर्तियाँ।

हां। वहाँ है। जादू, पैसा, सैन्य हार्डवेयर, मूर्तिपूजा।

वे भरे हुए हैं, और परिणाम क्या है? श्लोक 9. जो उनका इरादा था उसके बिल्कुल विपरीत। इसलिथे लोग नीचा किए जाते हैं, और सब दीन किए जाते हैं, और यशायाह परमेश्वर से कहता है, उनको क्षमा न कर। अब, इस विचार पर टिके रहें।

जैसे-जैसे यह अध्याय आगे बढ़ता है मैं इसके बारे में और अधिक बात करना चाहता हूँ, लेकिन खुद को ऊंचा उठाने की हमारी मानवीय कोशिशों का बिल्कुल विपरीत प्रभाव पड़ता है। चट्टानों में जाओ, ज़मीन में छुप जाओ, किससे? प्रभु की भयावह उपस्थिति, प्रभु का भय, उनके महामहिम का वैभव। अभिमानियों की आंखें नम की जाएंगी, और मनुष्य का घमण्ड नीचा किया जाएगा।

क्यों? केवल प्रभु ही महान होगा. यहां वह मुद्दा है जिससे हमें लगातार निपटना पड़ता है। इसके साथ यह अस्तित्व में नहीं रह सकता.

यह एक या दूसरा है, और भगवान कहते हैं, अंत में, इसका कोई मौका नहीं है। ठीक है, चलिए आगे बढ़ते हैं। श्लोक 12.

प्रभु का एक दिन किसके विरुद्ध है? वह सब कुछ जो गर्व और ऊंचा है, और फिर आपके पास है, और यह कविता है, दोस्तों, आपके पास कुछ उदाहरण हैं कि क्या गर्व और ऊंचा है। श्लोक 13 में पहला क्या है? लेबनान के देवदार, शक्तिशाली वृक्ष। हमने पिछले सप्ताह इस तथ्य के बारे में बात की थी कि इस पुस्तक में, पेड़ एक आवर्ती छवि है जिसका वह उपयोग करता है।

अक्सर, जैसा कि अध्याय 1 और यहाँ में, अहंकार और अभिमान का प्रतीक है, लेकिन यह फलदायी और स्थिरता और जड़ता का भी प्रतीक हो सकता है। इसलिए, आपको यह देखने के लिए अपनी आँखें खुली रखनी होंगी कि वह इसका उपयोग किस प्रकार कर रहा है। तो, हाँ, पेड़।

और क्या? श्लोक 14. पहाड़. श्लोक 15.

किलेबंदी। और अंत में, 16 में, जहाज़। यदि आपने देखा है कि वे 19 वीं शताब्दी के नौकायन जहाजों को क्या कहते हैं, तो आप समझते हैं कि उनमें कुछ लुभावनी बात है, और जो भूमध्य सागर में नौकायन कर रहे थे वे उतने ऊंचे नहीं थे, लेकिन फिर भी, किसी ऐसे व्यक्ति के लिए जो 'उन महान जहाजों में से एक को देखने के लिए जमीन पर खड़ा किया गया।

तो, यहाँ ऊँची, उठी हुई, गौरवपूर्ण चीजों के प्रतीक हैं। अब, यहाँ श्लोक 17 में फिर से चर्चा आती है। क्या होने वाला है? हाँ।

दैवीय महिमा के विपरीत, मानवीय महिमा का कोई मौका नहीं है। अब, मैं चाहता हूँ कि आप देखें, विशेषकर छंद 19 से 21 तक। मूर्तियां पूरी तरह से गायब हो जाएंगी।

लोग चट्टानों की गुफाओं में, ज़मीन के बिलों में भाग जायेंगे, कहाँ से? प्रभु का भय. प्रभु की भयावह उपस्थिति और उनकी महिमा का वैभव। श्लोक 20.

उस दिन लोग क्या करेंगे? वे अपनी चाँदी और सोने की मूर्तियाँ कहाँ तक फेंक देंगे? छछंदरों और चमगादड़ों को. अब, इसका क्या महत्व है? वे अशुद्ध हैं. छछंदर और चमगादड़ अशुद्ध हैं।

तो, यह सुनिश्चित करने के लिए कि आपकी मूर्ति साफ-सुथरी है, आप विस्तृत अनुष्ठानों से गुजरे हैं, यह सुनिश्चित करने के लिए कि उसमें कुछ भी शैतानी चीज नहीं जुड़ी है जो दृश्य और अदृश्य के बीच के संबंधों को तोड़ सकती है। बुतपरस्ती में स्वच्छता के इन अनुष्ठानों का यही मुख्य कारण है। आप राक्षसी को वहाँ से निकालना चाहते हैं क्योंकि राक्षसी चीजें लगातार गड़बड़ कर रही हैं।

विश्वदृष्टिकोण, पुनः, दोहराव शिक्षा का हृदय है। तुम्हें वह मिल गया, है ना? हां धन्यवाद। हाँ, दोहराव शिक्षा का हृदय है।

यह ब्रह्मांड है. ब्रह्मांड के भीतर, आपके पास तीन अंतरव्यापी क्षेत्र हैं। क्योंकि यह द्वि-आयामी है, यह वास्तव में अंतर्प्रवेश की भावना प्राप्त नहीं कर सकता है।

लेकिन यहाँ मानव है, यहाँ प्रकृति है, और यहाँ परमात्मा है। जो कुछ भी एक क्षेत्र में होता है वह स्वचालित रूप से अन्य दो में भी होता है। तो, बारिश नहीं हो रही है.

मुझे बारिश चाहिए. मैं मरने जा रहा हूँ। कोई क्रोगर नहीं है.

यदि इस वर्ष मेरी फ़सलों पर वर्षा नहीं हुई तो मैं इसे अगले वर्ष तक नहीं कर पाऊँगा। मुझे बारिश होनी है. तो, बारिश क्यों नहीं हो रही है? खैर, जाहिर है, आकाश देवता और पृथ्वी माता बाहर हैं।

अब, वे ऐसा क्यों कहेंगे? क्योंकि वे इस संसार के अपने अनुभव के आधार पर देवता की कल्पना कर रहे हैं। बाइबिल के बारे में यही बहुत चौंकाने वाली बात है। यह पूरी तरह से दूसरी दिशा में चला जाता है.

तो, ठीक है, अगर बारिश नहीं हो रही है, तो आकाश देवता और पृथ्वी माता वह नहीं कर रहे हैं जो उन्हें करना चाहिए। उन्हें क्या करना चाहिए? उन्हें एक साथ बिस्तर पर रहना चाहिए। तो, मैं उन्हें बिस्तर पर कैसे लाऊँ? मैं अपनी स्थानीय पुजारिन के पास सड़क पर जाता हूँ।

वेश्यावृत्ति एक मंदिर व्यवसाय था। अभी भी भारत में है। तो, वह और मैं एक साथ बिस्तर पर आ गए।

और यदि कड़ियाँ अपनी जगह पर हैं, और यह एक बड़ी बात है, तो राक्षसों को कड़ियाँ तोड़ना अच्छा लगता है। इसलिए, हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हम जो कुछ भी करते हैं वह साफ-सुथरा हो। और यदि हम ऐसा करते हैं, तो हम बिस्तर पर जाते हैं, वे बिस्तर पर जाते हैं, और यदि आप थोड़ी देर के लिए इसके बारे में सोचते हैं, तो आप फिर कभी बारिश में नहीं चलेंगे।

इसलिए, उन्होंने अपनी सारी ऊर्जा यह सुनिश्चित करने में लगाई है कि संकट के समय में उनके आदर्श साफ-सुथरे हों, वे उन्हें चमगादड़ों और छछूंदरों पर फेंक देंगे। वे चट्टानों की कंदराओं में, और लटकती हुई चट्टानों में भाग जाएंगे? यहाँ फिर से भय, प्रभु की भयावह उपस्थिति और उसकी महिमा का वैभव है। अब, मुझे कहने दो, यहाँ क्या हो रहा है? यदि हम मानवता को सभी चीजों का माप बनाते हैं, और जब हम अपनी छवि में देवताओं को बनाते हैं तो हम यही कर रहे होते हैं, तो हमने क्या किया है? हमने इस संसार को अर्थहीन बना दिया है।

अंतिम श्लोक देखें। उन साधारण इंसानों पर भरोसा करना बंद करें जिनकी नाक में बस एक सांस है। उन्हें किसी भी सम्मान में क्यों रखें? यूरोपीय दर्शन में यही हुआ है।

पिछली दो शताब्दियों में, हमने वही निष्कर्ष निकाला है, जो 5000 साल पहले सुमेरियों ने निष्कर्ष निकाला था, कि मानवता ही सभी चीजों का माप है। और नतीजा यह होता है कि फिर किसी चीज का कोई मतलब नहीं होता। उन साधारण इंसानों पर भरोसा करना बंद करें जिनकी नाक में बस एक सांस है।

शून्य से एक सांस और हम उसी की छवि पर ब्रह्मांड का निर्माण करने जा रहे हैं? नहीं, तो यहाँ यह है, ये लोग जो दुनिया को ईश्वर के प्रकट निर्देशों को समझने के लिए नेतृत्व करेंगे ताकि वे उसके रास्ते पर चल सकें, ये लोग मानवीय महानता से आसक्त हैं। और भगवान कहते हैं कि आप जो चाहते थे उसका बिल्कुल विपरीत आपको मिलने वाला है।

आपको मानवीय अर्थहीनता मिलने वाली है। दर्शन को अस्तित्ववाद कहा जाता है, लेकिन उत्तर-आधुनिकतावाद ही सब कुछ है। ऐसा कुछ भी नहीं है जिसका कोई मतलब हो।

ऐसा नहीं है कि सत्य सापेक्ष होता है। सत्य एक निरर्थक अवधारणा है। आपको शब्द की जरूरत भी नहीं है।

और इसलिए, आप जो भी करना चाहते हैं वह ठीक है। हममें से प्रत्येक को, अर्थहीनता की उबकाई का सामना करते हुए, अपना स्वयं का अर्थ बनाना होगा। हर समय यह जानते रहना कि कोई अर्थ नहीं है।

तो, मेरे जीवन का अर्थ क्या है? मैं आपको पिछले 38 वर्षों में नेशनल लीग में प्रत्येक पिचर का अर्जित रन औसत बता सकता हूँ। किसका मूल्य क्या है? लेकिन यही मेरे जीवन का अर्थ है। ठीक है।

आइए अब अध्याय 3 की ओर बढ़ते हैं। इस खंड में तीन छंद हैं। कविता के तीन टुकड़े। सबसे पहले श्लोक 1 से 5, फिर श्लोक 6 से 8 और फिर श्लोक 9 से 15।

उन सभी में चलने वाला सामान्य विषय क्या है? नेतृत्व। लड़के, मेल को आज रात सोने के सितारे मिल रहे हैं। नेतृत्व।

और कैसा नेतृत्व? खैर, मुझे लगता है कि जो दिलचस्प है, जॉन, वह यह है कि यह स्पष्ट रूप से कमजोर और कमजोर और कमजोर होता जा रहा है। ऐसा नहीं है कि इसका अस्तित्व नहीं है, लेकिन यह कमजोर होता जायेगा। बिल्कुल।

बिल्कुल। अब, मुझे इसके बारे में पूछने दीजिए। यह चुनावी वर्ष है, याद है? मैं यहां गधों या हाथियों के साथ नहीं जाऊंगा।

लेकिन अगर मानव उत्थान हमारा लक्ष्य है, और हमें अपने सबसे बुरे समय में इस वास्तविकता का सामना करना पड़ता है कि वास्तव में हमारा जीवन काफी हद तक अर्थहीन है, तो हम इंसान के रूप में, राजनीतिक जानवर के रूप में, हम उस समस्या को कैसे हल करने का प्रयास करते हैं? मानवीय कारण? और मानव नेताओं को ऊँचा उठाकर। आप यह कैसे कह सकते हैं? उन्हें सभी उत्तर मिल गये हैं। बिल्कुल।

बिल्कुल। कोई व्यक्ति। कोई ऐसा व्यक्ति जिसका हम बिना सोचे-समझे अनुसरण कर सकें।

लेकिन वह हमारी समस्याओं का समाधान करने जा रहा है। जब हम मानवता की प्रशंसा करते हैं तो अध्याय 2 हमसे क्या कहता है? नतीजा क्या हुआ? अर्थहीनता, विपदा, असफलता। जब हम उम्मीद करते हैं कि मानव नेता हमारी मूलभूत मानवीय समस्याओं का समाधान करेंगे, तो हम उन्हें असफलता की निंदा करते हैं।

वे नहीं कर सकते। दुनिया का कोई भी इंसान, सर्वश्रेष्ठ इंसान, कोई भी इंसान हमारी मूलभूत मानवीय समस्या का समाधान नहीं कर सकता। और इसलिए, अध्याय 3 एक बार फिर इसी के बारे में है।

आप मानव नेताओं की प्रशंसा करते हैं, क्या होता है? आपको असफल मानवीय नेता मिलते हैं। आप उन्हें जितना ऊँचा उठाएँगे, वे उतना ही दूर गिरेंगे। तो, श्लोक 1-5.

अब देखिए, प्रभु, स्वर्ग की सेनाओं का स्वामी, यरूशलेम और यहूदा से आपूर्ति और समर्थन, भोजन की आपूर्ति, पानी की आपूर्ति, नायक, योद्धा, न्यायाधीश, भविष्यवक्ता, भविष्यवक्ता और बुजुर्ग दोनों को लेने वाला है। , पचास का कप्तान, रैंक का आदमी, परामर्शदाता, कुशल कारीगर, चतुर और काम में कुशल। क्या आपको लगता है कि वह कोई बात कहने की कोशिश कर रहा है? बल्कि उस बिंदु के समान है जो हम अध्याय 3 के अंत में प्राप्त करने जा रहे हैं। यशायाह अति करने में माहिर है। मैं उन सभी मानवीय नेताओं को छीनने जा रहा हूँ जिनकी ओर तुमने देखा है, तुम्हें ऊँचा उठाने के लिए, और तुम्हें तुम्हारे जीवन की निरर्थकता से बचाने के लिए।

मैं साधारण नवयुवकों को उनका अधिकारी बनाऊंगा। बच्चे उन पर शासन करेंगे, लोग एक-दूसरे पर अत्याचार करेंगे, आदमी आदमी के खिलाफ होगा, पड़ोसी पड़ोसी के खिलाफ होगा, युवा बूढ़ों के खिलाफ उठेंगे, सम्मानित लोगों के खिलाफ कोई नहीं होगा। और फिर, यहाँ, यह यशायाह का बिल्कुल विशिष्ट है, यहाँ दो छंदों में यह ग्राफिक चित्रण है।

एक मनुष्य अपने भाइयों में से एक को उसके पिता के घर में पकड़ लेगा, और वह कहेगा, तेरे पास वस्त्र है, तू ही हमारा प्रधान हो। खंडहरों के इस ढेर का कार्यभार संभालें। उस दिन वह चिल्लाकर कहेगा, मेरे पास कोई उपाय नहीं, मेरे घर में न खाने को और न पहनने को, मुझे प्रजा का प्रधान न बनाओ।

यदि आप मानवीय नेताओं की प्रशंसा करते हैं, तो आप उन्हें असफलता की निंदा करते हैं। तो फिर श्लोक 6 में, मैंने सारांश कथन के रूप में 8 जोड़ दिया। यरूशलेम लड़खड़ा रहा है, यहूदा गिर रहा है, उनके शब्द और कार्य प्रभु के विरुद्ध हैं, उनकी महिमामय उपस्थिति का उल्लंघन कर रहे हैं।

आइए ल्यूक अध्याय 14, श्लोक 11 को देखें। प्रसिद्ध श्लोक, उन सभी के लिए जो स्वयं को बड़ा करते हैं, उन्हें नीचा किया जाएगा और जो स्वयं को विनम्र करते हैं उन्हें ऊँचा किया जाएगा। इसे विरोधाभास कहते हैं।

वे डॉक्टर की डिग्री वाले दो लोग नहीं हैं। ओह अच्छा। बाइबल उनसे भरी हुई है।

आप जीतना चाहते हैं, या हारना चाहते हैं। आप जीना चाहते हैं, या मरना चाहते हैं। आप उठना चाहते हैं, या गिरना चाहते हैं।

यदि तुम अपने आप को ऊँचा उठाओगे, तो तुम दीन हो जाओगे। यदि आप अपने आप को नम्र करेंगे, तो आप ऊँचे हो जायेंगे। अब, हम अपने अध्ययन के माध्यम से उस विषय से बार-बार निपटेंगे, लेकिन आइए कम से कम इसे यहां खोलना शुरू करें।

ऐसा कैसे है कि स्वयं को नम्र करने से उन्नति होती है? क्या वहां किसी को उत्तर मिला? हम वास्तव में इस मामले की सच्चाई पर पहुँचते हैं, कि हम वास्तव में कौन हैं, कि अपने आप में हमारे पास डींगें हांकने के लिए बहुत कुछ नहीं है। आप अपने आप को खाली कर दें ताकि

भगवान अंदर आ सकें। यह तब होता है जब हमें उनकी कृपा से एहसास होता है कि हमें स्वर्ग के राजकुमार और राजकुमारियां बनाया गया है, हम कहते हैं, वाह, मैं क्रूस के लायक हूँ।

मुझे कुछ लायक होना चाहिए. हाँ। हां, हां।

लेकिन सिद्धांत यह है कि जब हम यह पहचान लेते हैं कि केवल यहोवा ही श्रेष्ठ है, हम नहीं, तो हम इस स्थिति में होते हैं कि वह कह सके, यहाँ आओ। यहाँ आओ और मेरे पास सिंहासन पर बैठो। ठीक है, चलो आगे बढ़ते हैं।

श्लोक नौ. उनके चेहरे पर भाव. अध्याय दो से याद रखें.

उनकी घमण्डी आँखें नीची होने वाली हैं। उनके चेहरों का भाव उनके खिलाफ़ गवाही देता है. वे सदोम की तरह अपने पाप का प्रदर्शन करते हैं।

हमने कल रात टेलीविजन पर एक रहस्य देखा जिसमें इंग्लैंड में एक चर्च को समलैंगिक बार में बदल दिया गया था। और मुझे नहीं पता, मुझे लगता है कि लेखक सिर्फ़ वफ़ादार थे, लेकिन बार में लोग अपनी स्थिति और अपने अधिकारों का प्रदर्शन कर रहे थे। और मैंने उस समय सोचा, यशायाह इसी बारे में बात कर रहा था।

उन पर धिक्कार है. अब, मैंने अगले सप्ताह की पृष्ठभूमि में इस पर चर्चा की, लेकिन अब मैं आगे बढ़ूंगा। हिब्रू शब्द ओय है।

जैसा कि ओय वे में है। वह एक हिब्रू शब्द है. धिक्कार है मुझ पर.

ओए वेई इज़ हाय इज़ मी. हमारे पास समसामयिक अंग्रेजी का कोई समकक्ष नहीं है। दुर्भाग्यवश, इसमें ऐसा रंग आ गया है जो संभवतः नहीं होना चाहिए था।

सबसे अच्छा अंग्रेजी समकक्ष पुरातन अलास है। यह दुख और अफसोस का शब्द है. यह एक ऐसा शब्द है जिसका उपयोग आप अंतिम संस्कार में करते हैं।

और इसलिए यह यशायाह नहीं कह रहा है, उन पर धिक्कार है। उन्हें वही मिलेगा जो उन्हें उनके पास आने से मिला है। वह कह रहा है, ओह, अफसोस उनके लिए।

उन्होंने अपने ऊपर विपत्ति लायी है। पुराने नियम के भविष्यवक्ता नियमित रूप से, जब वे विपत्ति की घोषणा करते हैं, तो आंसुओं के माध्यम से इसका उच्चारण करते हैं। और यदि मैं, एक उपदेशक के रूप में, उपदेशात्मक निर्णय का आनंद लेता हूँ, तो मुझे अपने घुटनों पर बैठने की आवश्यकता है।

धर्मियों से कहो कि उनका भला होगा, क्योंकि वे अपने कर्मों का फल भोगेंगे। वे दो छंद बिल्कुल एक साथ बहुत अच्छे से फिट बैठते हैं। और वे हमें एक बहुत ही विचित्र तथ्य बताते हैं कि आप जो बोओगे वही काटोगे।

क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है? ऐसा कौन सोच सकता था? मेरा मतलब है, जब मैं गेहूं बोता हूँ, तो मुझे खुबानी मिलने की उम्मीद होती है। हालाँकि, आमतौर पर ऐसा नहीं होता है। अब, मैं यहां कह रहा हूँ वह यह है कि मैं हमारे फैकल्टी रिट्रीट में अपने अच्छे दोस्त स्टीव हार्पर के साथ इस बारे में बात कर रहा था।

आधुनिक पश्चिम वास्तव में विश्वास करता है कि हम जीवन की शर्तों को फिर से लिख सकते हैं। कि सब कुछ पकड़ में आ गया है। बाइबिल कहती है, नहीं, नहीं।

बेवफाई काटो, क्षमा करें, बेवफाई बोओ, और तुम इसे काटोगे। वफ़ादारी का फल पाओ, क्यों? क्योंकि तुमने इसे बोया था। हम श्लोक 11 में आते हैं, फिर, दुष्टों के लिए दुर्भाग्य, विपत्ति उन पर है।

जो कुछ उनके हाथों ने किया है उसका बदला उन्हें मिलेगा। तो वे तीन श्लोक, 9, 10, और 11, बहुत ही मार्मिक छंद हैं। हमें यह बताते हुए कि, नहीं, हम जीवन की शर्तें निर्धारित नहीं करते हैं।

सृष्टिकर्ता ने शर्तें निर्धारित कर दी हैं। और हमारी एकमात्र पसंद यह है कि हम उनमें रहेंगे या उन पर टूट पड़ेंगे। अब हम वापस आते हैं।

युवा मेरे लोगों पर अत्याचार करते हैं। उन पर महिलाएं राज करती हैं। मेरे लोग, तुम्हारे मार्गदर्शक तुम्हें भटका देते हैं।

वे तुम्हें मार्ग से भटका देते हैं। यहाँ यह टूटा हुआ नेतृत्व फिर से है। पद 14, प्रभु अपने लोगों के पुरनियों और नेताओं के विरुद्ध न्याय करता है।

तू ही ने मेरे अंगूर के बगीचे को उजाड़ दिया है। गरीबों की लूट तुम्हारे घरों में है। मेरे लोगों को कुचलने और गरीबों के चेहरे पीसने से आपका क्या मतलब है, स्वर्ग की सेनाओं के भगवान की घोषणा है ?

अब मैं आपसे पूछता हूँ, यदि हमें मानव नेताओं की प्रशंसा नहीं करनी चाहिए, तो फिर हमें क्या करना चाहिए? यशायाह वास्तव में यहाँ इसमें शामिल नहीं है, लेकिन हमें इसके बारे में सोचने की ज़रूरत है। मानव नेताओं के प्रति उचित रवैया क्या है? ठीक है, हमें उनका सम्मान करना चाहिए। पॉल 1 थिस्सलुनिकियों की पुस्तक में इसके बारे में बात करता है।

हमें उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए. और क्या? हमें नेताओं की ज़रूरत है, हाँ। और हमें इसके प्रति जागरूक रहने की ज़रूरत है।

हमें उनसे क्या अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए? पूर्ण विश्वास. मुझे लगता है कि मैंने यहां एक सनकी टिप्पणी सुनी है। मुझे ऐसा लगता है, हम यहां बैठे हैं और अपने राजनीतिक नेताओं के बारे में सोच रहे हैं, लेकिन यह हमारे ईसाई नेताओं के बारे में भी सच है।

बिल्कुल, बिल्कुल. और शायद हमारे राजनीतिक नेताओं से भी ज़्यादा। हां हां हां।

फिर, मैं कई अलग-अलग जगहों पर हूँ, मुझे ठीक से याद नहीं है कि मैंने इसे आखिरी बार कहा कहा था, लेकिन मैं गंभीरता से मानता हूँ कि मंत्रालय सबसे कठिन पेशा है। यह एक टूटा हुआ समाज है, और इन पुरुषों और महिलाओं पर टूटन का ढेर लगा हुआ है। उनसे उम्मीद की जाती है कि वे सब कुछ फिर से एक साथ रख देंगे, और यह एक कठिन, कठिन काम है।

हमें उनसे यह अपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि वे हमारे लिए वह करेंगे जो केवल ईश्वर ही हमारे लिए कर सकते हैं। हमें उन्हें ऐसे आसन पर नहीं रखना चाहिए जहां से वे गिर जाएं। और जब ऐसा होता है, तो हमें दयालु होना चाहिए।

हमने उनके साथ ऐसा किया. ठीक है, आइए देखें... अरे नहीं, जिम्मेदार नागरिक के रूप में, हमें यह समझने की कोशिश करनी चाहिए कि वे क्या कर रहे हैं, और क्या यह सही है, और यदि नहीं, तो इसके खिलाफ कार्रवाई करनी चाहिए। निश्चित रूप से, निश्चित रूप से।

वहां हमारी जिम्मेदारी है कि हम केवल भेड़-बकरियों की तरह काम न करें। ठीक है, आइए अब इस तीसरे अध्याय के अंतिम भाग को देखें। और यदि आप महिलाएं जाना चाहें, तो जा सकती हैं।

यहोवा कहता है कि सिय्योन की स्त्रियाँ घमण्डी हैं, गर्दन फैलाए चलती हैं, आँखें तरेरती हैं, नितम्ब हिलाते हुए अकड़ती हैं, टखनों पर आभूषण झनझनाती हैं। और यशायाह के पास टेलीविजन भी नहीं था। और परिणाम क्या होगा? पद 17, वह सिय्योन की स्त्रियों के सिर पर फोड़े डालेगा।

यहोवा उनकी खोपड़ी गंजा कर देगा। यह वह विषय है जो दोनों अध्यायों में चल रहा है। अपने आप को ऊँचा उठाओ, और परिणाम यह होगा कि तुम अपमानित हो जाओगे।

यहाँ जिस शब्द का प्रयोग किया गया है वह सिय्योन की बेटियाँ है। और फिर, मैं यहाँ टिप्पणीकारों के बीच कुछ हद तक अकेला हूँ। लेकिन वह शब्द, जब यह एकवचन है, सिय्योन की बेटी, केवल राष्ट्र की एक छवि है।

सिय्योन की बेटी है. इसलिए, मुझे संदेह है कि इसका इस्तेमाल प्रतीकात्मक रूप से किया जा रहा है, कि हम सिर्फ महिलाओं के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। हम सिय्योन, पुरुषों और महिलाओं के बारे में बात कर रहे हैं, जो खुद को ऊँचा उठा रहे हैं, और हम उससे निपटने के लिए यहां एक महिला की छवि का उपयोग कर रहे हैं।

अब, जैसा कि मैंने कहा, अधिकांश टिप्पणीकार इस पर मुझसे असहमत हैं। वे कहते हैं, नहीं, नहीं, हम यहां महिलाओं के बारे में बात कर रहे हैं। और शायद यह सही है.

लेकिन मुझे लगता है कि दूसरे पर भी विचार करने की जरूरत है। अब, अगले पाँच छंद अतिशयोक्ति का अद्भुत उदाहरण हैं। उस दिन, यहोवा उनके साज-सज्जा, चूड़ियाँ और सिर के बंधन और अर्धचंद्राकार हार, झुमके, कंगन, घूँघट, सिर की पोशाकें, पायल, कमरबंद, इत्र की

बोतलें और आकर्षण, हस्ताक्षर अंगूठियां और नाक की बालियां छीन लेगा। , बढ़िया अंगूठियाँ, टोपी, लबादे, बटुए, दर्पण, सनी के वस्त्र, मुकुट और शॉल।

वाह! वह अंतराल पर है. आपको क्या लगता है उसने ऐसा क्यों किया? और मत कहो क्योंकि वह स्त्री द्वेषी है।

वो सब क्यों? हाँ। यह भद्दा नहीं लग रहा है, लेकिन यह लगभग उन्हें नग्न करने की कल्पना है। वह सब कुछ छीन लेना जो उनके लिए शोभायमान होगा, इससे वे घमण्डी हो जायेंगे और उन्हें बिल्कुल शून्य कर देंगे।

इसलिए, एक अर्थ में, वे अब आकर्षक नहीं रहे। मैं भी महिलाओं के बारे में सोचता हूँ। सावधान, सावधान.

अलंकरण. ध्यान से। मुझे लगता है कि आप ऐसा कह सकते हैं कि महिलाओं को उनके श्रृंगार में देखना कहीं अधिक मनोरम है, और फिर क्योंकि पुरुष खुद को उसी तरह से नहीं सजाते हैं, और फिर सुंदरता और कुरूपता और सुगंध, मीठी खुशबू और बदबू के बीच का अंतर बहुत स्पष्ट है जब हम महिलाओं को उनकी जीवनशैली के कारण लाते हैं।

हां, हां। इसमें वस्तुओं की भी बहुतायत है। यदि हम इन लोगों को व्यक्तिगत रूप से नहीं देख रहे हैं, तो हम उन चीजों की एक लंबी सूची देखते हैं जो उन्हें नहीं करनी चाहिए थी।

हाँ हाँ हाँ। और फिर अहंकारी व्यक्ति की नजरों में वापस जाने पर भी उस व्यक्ति के गौरव को नीचा दिखाया जाएगा। हाँ हाँ हाँ।

हाँ। और सारा श्रृंगार पीछे छिपाने वाली चीज़ है। हां हां हां हां।

और मुझे लगता है कि यह इस परिपूर्णता के बारे में बात करने का एक और तरीका है, वह सब कुछ जो हम अपने जीवन को अर्थ देने के लिए किसी न किसी चीज़ से भरने के लिए करते हैं। और मुझे लगता है कि अगर यशायाह आज लिख रहे होते, तो उनके पास हमारे जीवन से जुड़ी चीज़ों के बारे में कहने के लिए और भी बहुत कुछ होता। मैंने कई बार कहा है कि जब मैं सेवानिवृत्त होऊंगा, तो मैं इनमें से एक भंडारण इकाई स्थान खरीदने जा रहा हूँ।

वह एक विकास व्यवसाय है. हमारे बेसमेंट भरे हुए हैं. हमारी अटारियाँ भरी हुई हैं।

हमारे गैराज भरे हुए हैं. और आपको खरीदना होगा, आपको बाकी सामान रखने के लिए एक भंडारण इकाई किराए पर लेनी होगी, वह सामान जो हमारे जीवन को अर्थ देगा। खुशबू की जगह बदबू.

सैश की जगह रस्सी। इसके बजाय अच्छे से सजे हुए बाल, और गंजापन। अच्छे कपड़ों की जगह टाट का कपड़ा।

खूबसूरती की जगह ब्रांडिंग. तुम्हारे आदमी तलवार से मारे जायेंगे। युद्ध में आपके योद्धा.

सियोन के फाटक विलाप और विलाप करेंगे। निराश्रितों को भूमि पर बैठना चाहिए। आप देखिए, सियोन अब जमीन पर बैठा है।

उस दिन सात स्त्रियाँ एक पुरुष को पकड़ लेंगी। अब, उस समाज में, एक महिला का सामाजिक स्थान किसी पुरुष, या तो उसके पिता या उसके पति, के साथ उसके रिश्ते से निर्धारित होता था। पति न होता तो सारी उम्र बेटी ही होती।

इतने कम आदमी होंगे कि सात-सात स्त्रियाँ एक आदमी को पकड़ लेंगी और कहेंगी, हम अपना खाना खुद खाएँगे, अपने कपड़े खुद दे दीजिएगा। बस हमें आपके नाम से बुलाया जाए. हमारा अपमान दूर करो.

अपमान की चरम तस्वीरें यहां हैं. बिलकुल जगह नहीं। हर कल्पना से भरपूर.

और इतना भयानक, बहुत भयानक, बहुत ही खाली। ओह, अमेरिका, अमेरिका. चलिए प्रार्थना करते हैं।

हे प्रभु, आपका धन्यवाद कि आप हमें त्याग नहीं देते। आपका धन्यवाद क्योंकि आप धैर्यवान और सहनशील हैं। गुस्सा करने में धीमें.

हे भगवान, यदि आप क्रोधी होते तो यह ग्रह कब का खाली हो गया होता। हमारी मदद करो प्रभु. इन पाठों को सीखने में हमारी सहायता करें।

हमें खुद को महत्व देने के लिए कितने कबाड़ की जरूरत है? आइए हम आपके साथ अपने रिश्ते में अपने जीवन का अर्थ खोजें। यह जानते हुए कि अगर हमारे और आपके पास कुछ नहीं होता, तो इतना ही काफी होता। हम कहते हैं कि भगवान, लेकिन हमारे लिए इस पर विश्वास करना वास्तव में कठिन है।

हमारी मदद करें। आपके नाम पर, हम प्रार्थना करते हैं, आमीन। यह यशायाह की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. जॉन ओसवाल्ट हैं।

यह सत्र संख्या दो, यशायाह अध्याय दो और तीन है।